Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 20, Issue No. 3, July-2023, ISSN 2230-7540

धर्म और समाज पर डॉ अम्बेडकर के विचार

डॉ. विकास कुमार*

सहायक आचार्य, इतिहास (vsy) श्री गोविन्द गुरु राजकीय महाविद्यालय, बांसवाड़ा

सार - धर्म मनुष्य में आशा और दृढ विश्वास उत्पन्न करता है. धर्म और समाज आपस में जुड़े हुए है ,धर्म मनुष्य के लिए आवश्यक माना गया है . धर्म के नाम पर किसी आडम्बर या पाखंड को स्वीकार नही किया जा सकता . स्वतंत्रता ,समानता , बंधुत्व और न्याय पर आधारित धर्म ही सच्चा धर्म है.

कीवर्ड - अम्बेडकर, धर्म, मूल्य ,बंधुत्व

----------X----------

प्रस्तवाना

मानव जाति के इतिहास में धर्म एक सर्वाधिक शक्तिशाली प्रेरक शक्ति रही है .उसने राष्ट्रों को संजोया और उजाडा है .उसने सम्राज्यो को जोड़ा भी है और तोडा भी है .जहा उसने अति क्रूर यथा बर्बर कार्यो को तथा अति जघन्य रीति रिवाजो को मान्यता दी ,वहां उसने अति शोर्य ,आत्मबलिदान और निष्ठां जैसे अति श्लाघनीय कृत्यों की प्रेरणा भी दी .जहां उसने अति रक्तरंजित कार्य करवाए तो सुख और शांति द्वार भी खोले है .कभी वह प्रगति ,विज्ञानं और कला का कट्टर शत्रु रहा तो आज वह एक नई तथा प्रतिभाशाली सभ्यता का सृजन एव लालन पालन कर रहा है

धर्म और समाज व्यस्था अप्रथक रूप से जुड़े हुए है .प्रत्येक धर्म की एक समाज व्यस्था होती है . प्राय : प्रत्येक समाज व्यस्था के पीछे धार्मिक अनुमति पाई जाति है और उसे दैवी प्रदत समझा जाता है ,क्योकि धर्म को एक सामाजिक शक्ति माना गया है .डॉ अम्बेडकर के अनुसार धर्म एक दिव्य प्रशासन की व्यस्था का समर्थन करता है .यह व्यस्था समाज के लिए एक अनुकरणीय आदर्श बन जाति है .वह आदर्श इस अर्थ में अस्तित्वहीन हो सकता है कि वह ऐसा कुछ है जिसे सृजित किया गया है .जो यधपि अस्तित्वहीन पर वास्तविक है .आदर्श होने के नाते उसमे पूर्ण क्रियात्मक शक्ति है , जो किसी भी आदर्श में अंतर्निहित होती है . किसी लोकिक आदर्श की तुलना में धार्मिक आदर्श में कही अधिक सामर्थ्य एव प्रतिष्टा होती है ,क्योकि उसके पीछे दैवीय मंजूरी होती है .इस प्रकार डॉ अम्बेडकर ने धर्म और समाज के अट्टू सम्बन्ध स्वीकार किया

डॉ अम्बेडकर धर्म को समाज के लिए आवश्यक मानते थे .अम्बेडकर कहते थे कि 'धर्म के प्रति यूवा वर्ग की उदासीनता या उपेक्षा को देखकर मुझे दुख होता है .धर्म कोई अफीम नहीं है जैसा कि कुछ लोग सोचते है .मेरे में क्या अच्छाईया या जो कुछ भी मेरी शिक्षा से समाज को लाभ हुआ , उनको मैंने अपने अंदर जो धार्मिकता की भावना है से लिया है . मै धर्म को चाहता हु लेकिन धर्म के नाम पर किसी पाखंड या आडम्बर को नहीं चाहता , और न ही पसंद करता हु.'

धर्म मनुष्य में आशा की जाग्रति करता है , उसे कार्य करने को प्रेरित करता है .आंबेडकर के अनुसार धर्म आदमी की सेवा के लिए है , न कि आदमी धर्म के लिए . जो धर्म अपने अनुयायियों को अन्य धर्मो के साथ मानवता दिखाने का पाठ नहीं पढाता ,वह कोई धर्म नहीं है .धर्म जो अज्ञानी को और अधिक अज्ञानी होने को बाध्य करता हो और गरीब को और अधिक गरीब बनाता हो , वह धर्म नहीं बल्कि निरिक्षण है .यदि लोग अपने धर्म के प्रति ठीक है या उन्हें धर्म में विश्वास है तो उन्हें विचार तथा अपने कर्म दोनों में इसका अनुसरण करना चाहिए

डॉ अम्बेडकर नियम और कानून के धर्म में विश्वास नहीं करते थे .वे सिद्धांतो पर आधारित धर्म में विश्वास करते थे .उनके अनुसार ,नियम प्रायोगिक है , ये कार्य करने या निर्णय करने का महत्वपूर्ण तरीका होते है .नियम कार्य करने की गति क्या है खोजकर बताते है ,सिद्धांत कार्य करने की विशेष गति को नहीं बताते , क्या और कैसे करना है .....लेकिन सिद्धांत ठीक प्रकार से सोच समझकर अपने दिमाक से कार्य करने के लिए भी

www.ignited.in

मोका देते है .इस प्रकार नियम और सिद्धांत में बहुत बड़ा अंतर है

डॉ अम्बेडकर ने धर्म को मानव जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक माना है .प्रो एल्वूड से सहमत होकर उन्होंने लिखा धर्म मूलतः एक मूल्य निर्धारण प्रवृति है , मनुष्य के विचारो से कई अधिक संकल्प और सवेंदो को सार्वभोमिक बनाता है . यह संकल्प तथा संवेग के पक्ष को लेकर अपनी दुनिया के साथ तथा मनुष्यों के बीच समन्वय करता है . धर्म कई स्थान पर लोगो को हतास करता है तो अन्य स्थान पर उनमे शाहस भी भरता है .वास्तव में धर्म मानव की मूल भावनाओ को सुद्रढ़ करता है .धर्म जीवन में संकट का सामना करने के लिए शक्ति के नए स्तरों को बनाता है , साथ ही आंतरिक तथा बाह्य पक्षों में एक घनिष्ठ समन्वय स्थापित करता है

डॉ अम्बेडकर ने सामाजिक जीवन में धर्म की शक्ति को स्वीकार किया क्योकि ये सामाजिक मूल्यों पर बल देता है . उन्हें सार्वभोमिक बनाता है , व्यक्ति के मन में स्थापित करता है , जो उन्हें अपने समस्त कार्यो में स्वीकारता है .अम्बेडकर ने सामाजिक आधार पर धर्म की आवश्यकता पर बल दिया .धर्म सामाजिक भूमिका अदा करता है .वह समाज से सम्बंधित है न कि व्यक्ति से .धर्म मानव व्यक्तित्व और मानव समाज के आवश्यक मूल्यों को संसार में प्रेक्षिपित करता है .धर्म सामाजिक नियंत्रण का भी साधन है . धर्म का कार्य कानून और सरकार के कार्यो की तरह है ,जिसके द्वारा समाज और व्यक्ति का आचरण नियंत्रित होता है .अम्बेडकर के विचार से धर्म के समर्थन के बिना कानून और सरकार सामाजिक नियंत्रण के माध्यम की दृष्टि से बहुत ही अपर्याप्त है , धर्म सामाजिक आकर्षण का शक्तिशाली आधार है जिसकी अनुपस्थिति में सामाजिक व्यवस्था बनाये रखना असंभव है

धर्म को समाज में सुधार करने का साधन माना जाता है .यही कारण था जिसके कारण अम्बेडकर धर्म का समर्थन करते थे .लेकिन हमारे देश में अनेक धर्मो के प्रचलित होने के कारण देश की एकता ,अखंडता ,को ध्यान में रखकर उन्होंने देश को धर्मनिरपेक्ष राज्य बनाने के लिए प्रयास किये .धर्मनिरपेक्ष राज्यों में आज भारत वर्ष का स्थान सर्वोच्च माना जाता है , जो कि डॉ अम्बेडकर की देन है

इस प्रकार डॉ अम्बेडकर के धार्मिक विचारो तथा धर्मनिरपेक्षता सम्बन्धी विचारो से यह पूर्णतया स्पस्ट हो जाता है की वे भारत में धर्म की कूव्यव्स्था ,अन्धविश्वासो तथा रूधिवादिताओ के विरोधी थे .इसलिए उन्होंने धर्म को आवश्यक मानते हुए इसे व्यक्तिगत रूप से लोगो को स्वीकार करने पर बल दिया . इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है की वास्तव में उनके धार्मिक विचार व्याहारिक थे .वे धर्मांधवाद ,अलोकिक सहधर्मियो के प्रति अमानवीय व्यव्हार ,ऊँच-नीच की भावना ,जातिवाद ,वर्णव्यस्था ,छुआछुत, पूर्वाग्रह ,असमानता , शोषण को धर्म के नाम पर नहीं चाहते थे , वे तो सच्चा धर्म चाहते थे ,जो स्वतन्त्र चिंतन ,मानव चेतना ,मित्रता ,प्रेम ,समानता स्वतन्त्रता और न्याय पर आधारित है .इसी कारण उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम समय में एक धर्म (बोद्ध धर्म) को स्वीकार किया ,जिसमे वे सभी गुण विद्यमान थे जिन्हें वे पसंद करते थे .इस बोद्ध धर्म के सहारे वे व्यक्ति को संसार की सेवा करने एव विश्वशांति की स्थापना करने जैसे सन्देश देकर मानव समाज और व्यक्ति दोनों का हित करना चाहते थे .इसी कारण २४ अक्टूबर १९५६ को उन्होंने नागपुर में बोद्ध धर्म ग्रहण किया .उस समय उन्होंने घोषणा की " बोद्ध धर्म एक व्यापक धर्म है , इसका मुख्य लक्ष्य दुखी मानवता का उद्धार करना है .यह धर्म न केवल संसार की सेवा का सन्देश देता है वरन विश्वशांति के लिए यह धर्म आवश्यक है "

संदर्भ ग्रन्थ

1. धनन्जय कीर : डॉ . अम्बेडकर लाइफ एंड मिशन (१९६२)

2. डॉ बी आर अम्बेडकर : राइटिंग एंड स्पीचेज ,वोल .३ (१९८७)

3. डॉ बी आर अम्बेडकर : राइटिंग एंड स्पीचेज ,वोल .४ (१९८७)

4. डॉ डी आर जाटव : डॉ अम्बेडकर का धर्म दर्शन (१९९३)\

5. चांगदेव खेरमोड़े : डॉ अम्बेडकर जीवन और चिंतन

Corresponding Author

डॉ. विकास कुमार*

सहायक आचार्य, इतिहास (vsy) श्री गोविन्द गुरु राजकीय महाविद्यालय, बांसवाड़ा